IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय संगीत व तकनीकी की जुगलबन्दी

डॉ0 आरती सिसोदिया
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
संगीत विभाग
एम0के0पी0 (पी0जी0) कॉलेज
देहरादून, उत्तराखण्ड (भारत)

सारांश : भारतीय संगीत के विकास उस युग से माना जाता है जब इस पृथ्वी का विकास भी पूर्ण रूप से नहीं हो पाया था। इस दैविक कला का विकास मानव मस्तिष्क के विकसित ज्ञान की पराकाष्ठा का द्योतक है, जो सदैव से ही एक आनन्दात्मक भाषा के रूप में पुष्पित एवं पल्लवित हुआ। तकनीकी के क्षेत्र में त्वरित गति से हुए परिवर्तनों तथा प्रगति के परिणामस्वरूप जहां जीवन का प्रत्येक क्षेत्र परिवर्तित व प्रभावित हुआ, वहीं हमारी भारतीय संगीत कला भी इससे अछूती नहीं रह सकी। तकनीकी के विकास क्रम में संगीत स्वरलिपि, ध्वनि मुद्रण व ध्वनि संग्रह के क्रान्तिकारी शोध ने भविष्य की विस्मयकारी सम्भावनाओं की नींव डाल, भारतीय संगीत के प्रचार के नए मार्ग खोल दिये। ध्वनि विस्तारक यंत्रों ने संगीत सभाओं का स्वरूप बदल दिया, ग्रामोफोन, फीता मुद्रक (टेप रिकॉर्डर) काम्पैक्ट डिस्क (सी0डी0) कम्प्यूटर, मल्टी–मीडिया, इन्टरनेट इत्यादि से भारतीय संगीत के क्रियात्मक स्वरूप को मूर्तरूप में व्यवस्थित रखने की सुविधा प्राप्त हुयी तथा इलैक्ट्रोनिक मीडिया ने समूचे विश्व को समेटकर एक छोटे से गांव (Global Village) में परिवर्तित कर दिया। भारतीय संगीत की अविरल धारा जो हजारों वर्षो से भारत भूमि में प्रवाहित होकर अपने अमृत जल से प्रत्येक जड़–चेतन को पुष्पित एवं पल्लवित करती रही है, तकनीकी के आगमन से इस दिव्य कला में एक अप्रत्याशित सी क्रान्ति आ गयी है तथा तकनीकी के माध्यम से भारतीय संगीत ने न केवल अपने देश के कोने–कोने में वरन् सम्पूर्ण संसार में प्रसारित होकर अपना उत्कृष्ट स्थान बना लिया है।

संकेत शब्द– संगीत, कला, ललित कला, कल्पना, तकनीकी, इलैक्ट्रोनिक मीडिया, वैज्ञानिक उपकरण ।

आजकल हम चारों तरफ एक ही नारा सुनते हैं और वह है ''संगीत की मार्के की उन्नति, उसकी जागृति, उसका क्रान्तिकारी प्रचार।'' एक बात जो हमको माननी पड़ेगी, वह यह है कि आधुनिक युग में हिन्दुस्तानी संगीत का जैसा व्यापक और महान प्रचार हुआ है, वह पचास–साठ वर्ष पहले कभी नहीं हुआ।[1]

आज से पचास वर्ष पूर्व भारतीय संगीत समाज में उच्च दृष्टि से नहीं देखा जाता था तथा उसे संस्कारहीन एवं अशिक्षित लोगों का संगीत मानते थे परन्तु जब वह प्रचार में आया और उसकी गरिमा से लोगों ने परिचय पाया तो वह हमारे देश की उत्कृष्ट कला विद्या समझी जाने लगी।

स्वतन्त्रता से पूर्व अलापा जाने वाला वह घिसा–पिटी और बेसुरा राग कि ''संगीत सुसंस्कृत व्यक्तियों के अपनाने की कला नहीं है, यह केवल मीरासियों का कार्य है आदि से न केवल मुक्ति पा ली वरन् यह एक संस्कारित श्रेणी में गिना जाने लगा तथा उसका पर्याप्त प्रचार एवं प्रसार हुआ और यह तकनीकी विकास द्वारा ही सम्भव हो सका।

भौतिक विज्ञान ने जिस तरह अन्य क्षेत्रों में अपना प्रभाव दिखाया है और नये–नये आविष्कार के जीवन के कई क्षेत्रों में नये–नये परिवर्तन किये जिससे संगीत का क्षेत्र भी अछूता न रहा। ग्रामोफोन, रेडियो, टेलीविजन, टेपरिकॉर्डर, फिल्म, सी0डी0, वीडियो डिस्क, कम्प्यूटर जैसे श्रृव्य तथा दृश्य वैज्ञानिक साधनों द्वारा यह अत्यन्त सहज होकर घर–घर में फैल गया। आज प्रायः गांव–गांव में, नगर–नगर में शायद ही कोई परिवार ऐसा होगा जिसके पास रेडियो, टेपरिकॉर्डर अथवा टीवी न हो। उच्च कोटि के संगीतज्ञ भी इनकी उपयोगिता स्वीकार कर चुके हैं।

ग्रामोफोन रिकार्ड के अविष्कार से विभिन्न कलाकारों की कला वहां तक पहुंची जहां श्रोता इन सब परिधियों से बाहर था। ध्वन्यांकन के माध्यम से महान् कलाकारों, जैसे– फैयाज खाँ, अब्दुल करीब खाँ, मिस गौहर जान, मलकाजान आदि ने अपनी कला से जनता को अवगत कराया। वह कला जो घराना प्रथा की संकुचित दृष्टि के कारण नीचे दबती जा रही थी, अब उभर कर उसके समक्ष आ गयी।

जो भजन, गीत, कव्वाली, गजल आदि कवियों की कलम से पुस्तकों में बन्द थे, वे अब किताबों से निकलकर रिकार्ड के माध्यम से शहर–शहर तथा गाँव–गाँव में गुंजयान हो गये। ग्रामोफोन रिकार्ड संगीत के प्रचार का एक सहज व त्वरित माध्यम सिद्ध हुआ।

शास्त्रीय संगीत को जन सुलभ व लोकप्रिय बनाने में जो महत्वपूर्ण आकाशवाणी की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण रही है। ऑडीशन सिस्टम, रेडियो संगीत सम्मेलन, भारतीय संगीत पर परिचर्चाऐं, सांगीतिक प्रतियोगिताऐं, रविवारी संगीत कार्यक्रम, संगीत सम्मेलनों का प्रसारण, शास्त्रीय संगीत का दैनिक प्रसारण, इन गतिविधियों द्वारा सांगीतिक प्रचार व प्रसार में अत्यधिक सहायता मिली है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार एवं प्रसार में ऑल इण्डिया रेडियो के महत्व पर टिप्पणी करते हुए तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री एच0के0एल0 भगत जी ने कहा था–

"Classical Music is no longer the preserve of the privileged few as radio, has taken to every home. AIR has played no smaller role in encouraging old and traditional music of India. also its light music output was both significant and substantial."[2]

1952–53 में आकाशवाणी ने एक नया नारा प्रारम्भ किया– शास्त्रीय संगीत का प्रचार। प्रत्येक केन्द्र नये–नये कलाकारों की खोज करने लगा तथा अत्यन्त उत्साह के साथ संगीत सम्मेलनों का आयोजन किया जाने लगा। यद्यपि आकाशवाणी के शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम उच्च स्तर के थे फिर भी सुगम संगीत और फिल्मी संगीत के प्रचार के लिए विविध भारती सेवा का प्रारम्भ किया गया।

रेडियो संस्कृति का संजाल तेजी से फैल गया और वर्तमान में रेडियो द्वारा भारतीय संगीत की पहुँच छोटे गाँवों के खेत खलिहानों तक हो गई है। संगीतिक प्रतियोगिताओं एवं परिचर्चाओं के माध्यम से आकाशवाणी के उन कलाकारों को सुनवाया जो इस क्षेत्र में वरीयता हासिल किए हुए थे और ऐसे कलाकारों को मौका दिया जो हमारे लिए नये थे।

दूरदर्शन के आगमन से शास्त्रीय संगीत के कलाकारों को घर बैठकर सुनने के साथ–साथ देखने का भी अवसर संगीत प्रेमियों को होने लगा। दूरदर्शन पर 'सुप्रभात' और अखिल भारतीय कार्यक्रमों का आनन्द लेते हैं, इस प्रकार दूरदर्शन के माध्यम से कलाकार और उनकी कला का आनन्द सहज ही प्राप्त हो जाता है। दूरदर्शन पर अनेक सुगम–संगीत, लोक–संगीत, शास्त्रीय संगीत एवं भक्ति संगीत के कार्यक्रमों को निर्माण किया गया था तथा विज्ञापनों के माध्यम से प्रत्येक शिशु भी संगीत को गुनगुना कर उसका आनन्द लेने लगा।

सेटेलाइट प्रसारण के माध्यम से अनेक चैनल उपलब्ध है, जिससे मात्र एक बटन दबाकर इच्छानुसार कार्यक्रम प्राप्त किया जा सकता। संगीत प्रेमियों के अनेकों ऐस संगीतमय चैनल हैं जिन पर 24 घंटे हिन्दी भाषा के अतिरिक्त अनेक क्षेत्रीय भाषाओं में संगीत उपलब्ध है। सेटेलाईट चैनल होने के कारण ये केवल भारत में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व में भारतीय संगीत का प्रचार कर रहे हैं।

बी0एन0 गोस्वामी जी के शब्दों में – "If the nineteenth century was the period of Industrial Revolution, the beginning of the twentieth century was the period of revolution in Mass Communication. The invention of Radio and Television brought major and speedy revolution in the world which made it possible to communicate the message in a broader way to the masses in no time. The period and faster growth of these electronic media made a different type of man of the earth.[3]

भारत में आम आदमी को संगीत प्रेमी बनाने का श्रेय चलचित्र संगीत को है। चलचित्र संगीत के माध्यम से संगीत का जितना प्रसार हुआ, वैसा प्रसार सम्भवतः किसी माध्यम से होना असम्भव था। इसके माध्यम से यत्र–तत्र सर्वत्र संगीत की ध्वनि गुंजती हुई नजर आती है। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जो टूटी–फूटी ध्वनि में एक दो फिल्मी गानें न गा लेता हो। यहां तक कि तोतली भाषा में तीन–चार वर्ष के बच्चे भी सिनेमा के गाने गाते हुए दिखाई पड़ते हैं।

श्री हमीदउद्दीन महमूद के शब्दों में– ''सिनेमा जनता तक पहुंचने वाला सबसे अच्छा माध्यम है''[4] तथा इस माध्यम द्वारा भारतीय संगीत का व्यापक प्रचार एवं प्रसार हो रहा है। फिल्मों के साथ जो शास्त्रीय गीत जुड़ गये हैं, वे जनसामान्य में अधिक प्रचार में है क्योंकि वे राग, ताल एवं स्वरों की शुद्धता को कायम रखते हुए इस खूबी से निबद्ध किए गए हैं कि वे अत्यन्त कर्णमधुर बन गए हैं। शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में इन बन्दिशों का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

फिल्मी संगीत नवीन शैली का होने पर भी अपने में समृद्ध है, जिस कारण इसमें निहित विशेषताऐं हैं, इनमें से एक है कि यह विभिन्न शैलियों को अपने में समेट कर चलती है। गजल, कव्वाली लोकगीत जैसी शैलियाँ जो कालांतर में प्रायः लुप्त हो चली थी, फिल्म क्षेत्र में आकर पुनः उभरने लगी। इसके अतिरिक्त यह नित–नूतन परिधान पहनकर सामने आती हैं। फिल्मी संगीत में शास्त्रीय रागों को आधार मानकर रचनाऐं हुई है, जिससे शास्त्रीय संगीत का ज्ञान न रखने वाले भी अनजाने में अनायास ही उस राग की मधुर सरिता में स्नान करने लगते हैं।

भारतीय फिल्म गीत में शास्त्रीय संगीत के साथ ही साथ लोक संगीत का भी समान रूप से प्रचार किया है। पंजाबी, उत्तर प्रदेशीय, बिहारी, गढ़वाली तथा पहाड़ी धुनों का आश्रय लेकर फिल्मी गीतों की रचनाऐं हुई हैं। विभिन्न लोकधुनों के मिश्रण से नए–नए गीतों का प्रयोग हुआ तथा बंगाल की लोकधुनों में झूमर तथा भटियाली भी हिन्दी फिल्मों में लिया जाने लगा।

चित्रपट संगीत के माध्यम से पुराने भारतीय लोक गीतों का भी पुनरूद्धार हुआ। कभी घर–आगन में जो लोक–गीत ढोलक और मंजीरों के साथ बड़े आनन्द और उल्लास से गाए जाते थे, वे आज टी0वी0, ट्रांजिस्टर के मशीनी युग में प्रायः लुप्त हो चले थे लेकिन सिने–संगीत ने ऐसे समय में अनेक लोकगीतों के शब्दों में हुई धुनें और नए स्वर भरकर जनता के सम्मुख प्रस्तुत किये, जिससे वे उसके प्रति आकृष्ट हो गये व उन भूले बिसरे गीतों का प्रचार हुआ।

टेप रिकॉर्डर, सी0डी0 प्लेयर ने भी संगीत के प्रचार का कार्य बहुत ही प्रभावशाली रूप से पूर्ण किया। आज कैसेट, सी0डी0, चिप आदि के माध्यम से भारतीय संगीत सहज उपलब्ध है। वर्तमान में शास्त्रीय गायन तथा वादन से सम्बन्धित अनेक कैसेट तथा सी0डी0 हैं तथा इनके द्वारा सुविधानुसार संगीत प्राप्त हो जाने के कारण यह अत्यधिक प्रचार में है।

कम्प्यूटर तथा इन्टरनेट के माध्यम से भारतीय संगीत इस देश में ही नहीं वरन् संसार के कोने–कोने में फैलकर अपनी विजय पताका फहरा रहा है तथा इन्टरनेट के www. (world wide web) द्वारा भारतीय संगीत देश की सीमाऐं लाँघकर विदेशों में भी प्रसारित हो रहा है।

ग्रामोफोन, रेडियो, टेलीविजन, कैसेट्स, सी0डी0 आदि विद्युत त्वरित उपकरण हैं जिन्होंने अपनी विशिष्टताओं द्वारा प्रत्यक्ष रूप से भारतीय संगीत के प्रचार एवं प्रसार में अपना विशेष योगदान दिया है किन्तु इनके अतिरिक्त कुछ अन्य ऐसी वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हैं जिन्होंने परोक्ष रूप से भारतीय संगीत को लोकाभिमुख कर इस क्षेत्र में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है, इनमें प्रमुख हैं– यातायात के साधन, दूरसंचार फोटोग्राफी, ई–मेल इत्यादि। पूर्वार्ध में संगीत सम्मेलनों अथवा गोष्ठियों में सम्मिलित होना दुश्कर कार्य था। इनका आयोजन किसी स्थान विशेष पर होता था तथा यातायात के साधनों के अभाव में कई–कई मीलों यात्रा करके उसके रसास्वादन का आनन्द कुछ विरले ही प्राप्त कर पाते थे अथवा कुछ तो ऐसे थे, जिन्हें टेलीविजन, फैक्स, ई–मेल आदि संचार साधनों के अभाव में यह सूचना ही नहीं प्राप्त होती थी कि किसी संगीत सम्बन्धी कार्यक्रम का

आयोजन भी किया जा रहा है, किन्तु वर्तमान में वैज्ञानिक उपकरणों की उपलब्धता के परिणामस्वरूप इन सभी समस्याओं का समाधान हो गया है तथा आम आदमी भी इन सुविधाओं का प्रयोग कर सकता है।

इसके साथ ही कलाकारों को भी सुविधा प्राप्त हुई है। यातायात साधनों की उपलब्धता के कारण अधुना में वे एक ही दिन में दो–तीन बड़े–बड़े शहरों में ही नहीं वरन् बड़े–बड़े देशों में भी अपना कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकते हैं। इस प्रकार विदेशों में भी अपना प्रस्तुतीकरण करके वे सफलतापूर्वक भारतीय संगीत का प्रचार एवं प्रसार कर रहे हैं। दूरभाष की सुविधा के कलाकारों के विदेशों में भी सम्बन्ध स्थापित है, जिससे संगीत आयोजनों के प्रयोजनार्थ सम्पर्क करना अत्यन्त ही सरल हो गया है।

पण्डित रविशंकर, उस्ताद अली अकबर खाँ, उस्ताद अमजद अली खाँ इत्यादि ऐसे उच्च कोटि के कलाकार हैं, जिन्होंने भारतीय तथा पाश्चात्य संगीत को मिलाकर तथा नए–नए प्रयोग कर विदेशों में भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचार किया है। सन् 1954 ई0 में उस्ताद अली अकबर खाँ ने पहली बार यहूदी मैन्यूहिन के सहयोग से 'फोर्ड फाउन्डेशन (Ford Foundation) योजना के अन्तर्गत न्यूयार्क, वाशिंगटन, लन्दन आदि में कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इन्होंने प्रसिद्ध गिटार वादक जुलियन ब्रीन के साथ ही कुछ रचनाऐं की हैं। इस प्रकार अमेरिका टी0वी0 पर कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले ये प्रथम भारतीय संगीतकार हैं।

ग्रैमी अवार्ड से सम्मानित पण्डित रविशंकर जी ने भी भारतीय संगीत को विश्व में अपना एक विशेष स्थान प्रदान करने में विशेष योगदान दिया है। इन्होंने विश्वविख्यात वायलिन वादक यहूदी मैन्यूहिन के साथ सितार और वायलिन के जुगल बन्दी के कार्यक्रम भी दिए जिसके माध्यम से भारतीय संगीत विश्व संगीत में सर्वोच्च स्थान पर आसीन हुआ। इन्होंने विश्व प्रसिद्ध 'बीटल ग्रुप' के जार्ज हरीसन के अतिरिक्त अन्य अनेक देशियों को सितार की शिक्षा प्रदान कर भारतीय संगीत का प्रचार किया।

ग्रैमी अवार्ड से सम्मानित प्रसिद्ध गिटार वादक पण्डित विश्वमोहन भट्ट की उपलब्धियों ने भी भारतीय संगीत को एक नवीन दिशा प्रदान की। सन् 1994 ई0 में अमेरिका के स्पैनिश गिटार वादक श्री राई कूडर के साथ जुगलबन्दी करते हुए उन्होंने 'ए मीटिंग बाई द रिवर' (A Meeting By the River) नामक रचना का कॉम्पेक्ट डिस्क के लिए बजाई थी। इस डिस्क ने लगातार चालीस हफ्तों तक संसार की दस सर्वश्रेष्ट डिस्कों में जगह बनाए रखी। यह एक विश्व रिकॉर्ड है।[5]

कुछ विदेशी पॉप गायकों जैसे– रोलिंग स्टोन्स बीटल आदि ने अपनी रचनाओं में भारतीय वाद्य सितार को प्रमुख स्थान दे रखा है। इस प्रकार भारतीय संगीत वाद्य केवल भारतवर्ष में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण संसार में प्रचार में है। इन कलाकारों ने विदेशों में भारतीय संगीत का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर उसे सर्वत्र प्रसारित किया है।

इस प्रकार इस तकनीकी विकास द्वारा भारतीय संगीत का जैसा प्रचार एवं प्रसार हुआ है वैसा व्यापक प्रचार पहले कभी नहीं हुआ। नए–नए वैज्ञानिक साधनों से यह प्रयास किया गया तथा संगीत शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या में वृद्धि हुई। इस प्रचार के माध्यम से जो विद्या पहले पेशेवर उस्तादों व गुरूओं के पास थी, उसकी जानकारी अब जनसामान्य को भी होने लगी तथा उनमें सांगीतिक लालित्य के रसास्वादन की लिप्सा भी बढ़ी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ0 सुशील कुमार चौबे– ''हमारा आधुनिक संगीत'' (अ–1 पृ0–28)
2. B.N. Goswami – "Broadcasting: New Patron of Hindustan Music" (Chapter – 10, Pg-151)
3. B.N. Goswami – "Broadcasting: New Patron of Hindustan Music" (Introduction Pg.-13)
4. डॉ0 महेन्द्र मित्तल – ''भारतीय चलचित्र '' (अ–1, पृ0–3) उद्घृत ''फिल्मेफेयर'' फरवरी 21, 1964.
5. डा0 मुकेश गर्ग– ''बाजार की गिरफ्त में है शास्त्रीय संगीत'' (''संगीत'', वर्ष–61, अंक–3, मार्च 1995, पृ0–48)